4422

4422

* जय जय श्रीनृत्यराघवायनमः *

रामसखे चरितामृत

लेखक व प्रकाशक—

महन्त श्रीसियाशरणजी महाराज

नृत्यराघवकुंज, अयोध्या

मुद्रकः—श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।

बार १०००] सं० २०१० [मूल्य सदुपयोग

* जय श्रीनृत्यराघवायनमः *

भूमिका

श्रीअवध सन्तों की पावन भूमि है। भगवान श्रीराम के साथ ही अनेक परम भागवतों का अवतार भी इस दिव्य अलौकिक धाम में हो चुका है जिनके अलौकिक चरित्र इस धरा धाम पर भावुक भक्तों के हेतु प्रकाश दीप का कार्य करते हैं। नृत्य राघवकुञ्ज वासुदेवघाट के संस्थापकाचार्य अनन्त श्रीविभूषित श्रीरामसखेजी महाराज इसी प्रकारके सन्तोंमें से थे माध्व सम्प्रदाय में प्रवृष्ट होकर सख्य सम्प्रदाय की नवीन परम्परा का आपने सृजन किया। इस सम्प्रदाय के सन्त अपने को भगवान श्रीरामचन्द्र जी का सखा मानते हैं। श्रीराम सखेजी महाराज जैसे प्रसिद्ध सन्त थे वैसे ही उद्भट कवि और लेखक भी थे आपके रचित कतिपय भावपूर्ण ग्रन्थ है जो शीघ्र ही प्रकाश में आने वाले हैं। प्रस्तुत पुस्तक उन्ही महापुरुष का संक्षिप्त जीवन चरित्र है जिसका सम्पादन सख्यरस के महान भावुक सन्त श्रीमहात्मा सियाशरणजी महाराज ने किया है।

आप श्री नृत्यराघव कुञ्ज के उत्तराधिकारी महान्त हैं। आपके द्वारा ६–७ यज्ञों का समारोह सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ और किशनगढ़ राजस्थान में आपकी पर्याप्त प्रसिद्धी है तथा आज भी वहां की जनता आपके प्रति अटूट श्रद्धा रखती है आप इस समय नृत्य राघव स्थान की बड़ी अच्छी उन्नति कर रहे हैं। श्रीराघवेन्द्र सरकार से मंगल कामना है कि आपके शुभ संकल्पों में सहयोग प्रदान करते रहें।

श्रीअवधधाम उत्तर प्रदेश
२६—१—५४ ई०

रामगोपाल पाण्डेय 'शारद'
साहित्यरत्न सम्पादक विरक्त

4422

* निवेदन *

परमादरणीय वैष्णवगण !

इस पुस्तक में माध्य सम्प्रदाय की मूल गादी दक्षिण स्थित उड़पी के आचार्य्य अनन्त श्रीविभूषित श्रीवशिष्ठाचार्य्यजी महाराज के लोकोत्तर शिष्य श्रीमद्रामी सखेन्द्र जू महाराज का जीवन चरित्र, कुल परम्परा, धाम क्षेत्र तथा संक्षिप्त दोहावली का उल्लेख है ।

सम्प्रदाय सम्बन्ध से समस्त माध्व सम्प्रदाय के वैष्णव महानुभावों को इस इतिहास की जानकारी परमावश्यक है। इस उद्देश्य से हमने सम्प्रदायिक ग्रन्थों से संग्रह कर सम्प्रदाय की यथा साध्य यह सेवा की है।

आशा है, सभी वैष्णव महानुभाव इसको नित्य पाठ पुस्तक में रखकर हमारे मनोरथ को सफल बनायेंगे।

निवेदक—

महन्त श्रीसियाशरण

नृत्य रघवकुंज, अयोध्या

* जय जय श्रीनृत्यराघवायनमः *

श्रीअयोध्याजी, नृत्य राघवकुञ्ज के वर्त्तमान वयोवृद्ध महान्त षट श्रीविभूषित श्रीसरयूशरणजी महाराज की

बहुमूल्य सम्मति

प्रिय श्रीसियाशरण ! सस्नेह हरिस्मरण ।

इस प्रयाग कुम्भ महापर्व के सुअवसर पर तुम्हारे प्रेम तथा परिश्रम से श्रीरसिकाधिराज षट श्रीमद्राम सखेन्द्र जू महाराज का जीवन चरित्र, कुल परम्परा तथा संक्षिप्त दोहावली छपने जा रही है। तुम यह एक आवश्यक कार्य की पूर्त्ति कर रहे हो, इतना ही नहीं, जबसे तुम इस कुल परम्परा में आकर साधू भये, तबसे तुम्हारा जीवन धर्ममय, त्यागमय, आदर्शमय बीत रहा है। इसके लिये मैं उपास्यदेव श्रीनृत्य राघव जू से चाहता हूँ कि तुम्हें अपना सेवक जान सदैव सहयोग प्रदान करें।

मैं अपने वंश परम्परा में तुम्हें सब विधि योग्य सञ्चालक समझकर हम अपनी इस वृद्धावस्था में श्रीनृत्यराघवकुञ्ज के महान्त पद पर नियुक्त कर परम प्रसन्नता को प्राप्त कर रहा हूँ। श्रीनृत्य राघव जू तुम्हें दीर्घायु करें यही हमारी शुभ कामना है।

महान्त-श्रीसरयूशरण

नृत्य राघवकुञ्ज, अयोध्या

* श्रीनृत्य राघवायनमः *

समर्पण

परमाराध्य, प्रातः स्मरणीय विद्यावयोवृद्ध,
पूज्यपाद, गुरुवर्य षट श्री महान्त
श्रीसरयूशरणजी महाराज

के

कर कमलों में सादर समर्पित

जिनके चरण कमलाश्रित होकर

मैं

यह सौभाग्य प्राप्त कर सका।

लेखक- श्रीसियाशरण

* श्रीनृत्यराघवायनमः *

साकेत निवासी–सख्यरस बिकासी

श्रीरामसखेजी महाराज का परिचय

माध्व भाष्य निज द्वैत मत, मिलन द्वार हनुमान।
रामसखे विधि सम्प्रदा, उड़पी गुरु स्थान॥

भद्र पुरुष पाठको! इस असार संसार में प्रायः जितने भी महापुरुष महान आत्मा संसार तथा आत्मोद्धार के निमित्त प्रगट होते आये हैं। उनसे संसार का बड़ा भारी उपकार हुआ है। मैं उन्हीं महापुरुषों में प्रसिद्ध सिद्ध शिरोमणि श्री रामसखेजी महाराज का आदर्शमय जीवन चरित संत महात्मा व सद्गृहस्थ बन्धुओं की जानकारी के लिये लिखने को लेखनी उठाया हूँ। यद्यपि भागवतों का चरित्र भगवत चरित्र से भी अगम अपार है यथा—

भरत महामहिमा सुनु रानी। जानहिंराम न सकहिंबखानी

तथापि–'जिमि निजमति अनुरूप ते मसक उड़ाहिं अकाश' के अनुसार लिखने की चेष्टा कर रहा हूँ।

रस एक दिव्य अलौकिक पदार्थ है। भावोत्कर्ष से उत्पन्न हुआ लोकोत्तर चमत्कार रस का साधारण लक्षण है। आत्मोन्मुख मन को ब्रह्मानन्दानुभव से जो भावोत्कर्ष होता है वही भक्तरस है। आत्मा से जो उस अवस्था में मन की एकता अथवा मैत्री

स्फुरित होती है वही सख्य रस है। सख्य रस का स्पष्ट निर्देश वेदों और उनके उपनिषद्भाग में भरा पड़ा है यथा—

'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वादवत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥'

इत्यादि। जीव और ईश्वर परस्पर अंशाशी होने से समान धर्मी अत्येव सहज सखा हैं।

'ईश्वर अंश जीव अविनाशी।' तथा 'इदं ज्ञान मुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागता।' इत्यादि इसके प्रमाण हैं।

श्रीसुदामाजी, श्रीसुग्रीवजी श्रीविभीषणजी, श्रीअर्जुनजी महाराज की भांति अनन्त श्रीविभूषित, परमाराध्य प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद श्रीमद्रामसखेजी महाराज भी भगवान रामके परम सखा थे। आप कुलीन ब्राह्मण गौड़ राजस्थान जयपुरके थे। आप बाल्यावस्थासे ही काव्यकुशल तथा भगवत भागवत सेवामें संलग्न रहते थे। आप अधिक स्वरूपवान् तथा सात्विकगुणोंसे युक्त थे। अत जयपुर श्रीगलता गाद्याचार्य श्रीमधुराचार्यजी महाराजके समयमें उनके यहां श्रीलक्ष्मण जी का स्वरूप बनते थे। एक समय श्रीरामजी के स्वरूप बननेवाले से श्रीमहाराजजू का आपस में बिबाद होगया। श्रीमहाराजजू उस दिन दुःख मान बिना प्रसाद पाये सो गये। भक्तवत्सल अपने सखा की सुधि लेने वाले श्रीसीतारामजी से रहा नहीं गया। शयन भोग का सुवर्णमय उत्तम थाल अनेकानेक पदार्थों से सजा हुआ

श्रीस्वामीजी के पास श्रीरामभद्रजू की प्रेरणा से पहुंच गया। कोठरी बन्द थी आवाज आती है कि मैं तुमको दुःखित देख नहीं सकता, मेरा प्रसाद ग्रहण करो। श्रीमहाराज जू श्रीसीतारामजी की असीम कृपा जान गद्गद् चित्त से उस अमृतमय महाप्रसाद को पाये। अपार आनन्द आया, क्यों नही, भगवान् के कर कमलों की दी हुई प्रसादी थी। इस कृपा को स्मरण करके श्रीस्वामीजी आनन्द में विभोर होगये।

प्रातःकाल हुआ पुजारी वर्ग नित्यकर्म से निवृत्त होकर मन्दिर में प्रवेश किया, अन्दर शयन भोग का थाल नहीं पाकर सब समाचार आचार्यजू को जनाया। श्रीस्वामीजी ने ध्यान धर कर देखा सारी स्थिति का पता लग गया। आचार्य जू स्वयं चलकर श्रीसखेजी के पास पहुंचे और हृदय से लगाकर बोले कि श्रीराम-भद्रजू ने आपको अपना सखा माना है सांसारिक जीवों को आपसे बड़ा भारी कल्याण होगा। देशमें आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति तथा धर्म की स्थापना करें यही मेरा आदेश है।

श्रीआचार्यजू की आज्ञा पाकर सखेजी बड़े प्रसन्न हुये और जैसी आज्ञा कहकर कुछ दिनों के बाद प्रचाराथ निकले। आप अनेक स्थानों में भ्रमण करते तथा योग्य गुरू की खोज करते हुये दक्षिण स्थित स्थान उड़पी में पहुंचे। श्रीरामभद्रजू के सखा होने के नाते श्रीगुरु की जगह गुरुदेव श्रीवशिष्ठजो की आवश्यकता रही, उर प्रेरक रघुवंश विभूषण की इच्छा से उस समय माध्व सम्प्रदाय की

मूलगादी उड़पी के आचार्य अनन्त श्रीविभूषित श्रीवशिष्ठ तीर्थ जी महाराज थे। श्री गुरु वशिष्ठजी को पाकर श्रीमहाराजजू का चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ और आपसे गुरुदीक्षा ग्रहण किये।

श्रीगुरु वसिष्ठ तीर्थजी महाराज श्रीरामसखेजी में श्रीदाशरथि राम के प्रति अटूट श्रद्धा भक्ति तथा सख्य रस को भावना देखकर श्रीमहाराजजू को मंत्रराज का जाप्य और श्रीरामभद्रजू के साथ सख्यरस का सम्बन्ध बतलाये। आचार्य चरण श्रीवशिष्ठ तीर्थ जी महाराज अपने समयमें श्रीकृष्ण भगवानके परम उपासक थे और माध्व सम्प्रदायाचार्य होते हुये भी श्रीरामकृष्ण भगवान में अभेद बुद्धि रखते थे। आज भी रत्नसिंहासन के ऊपर श्रीरघुनाथजी की मूर्ति विराजमान है। श्रीवशिष्ठ तीर्थजी महाराज के समय में तथा आज भी वहां शिष्य की भावना देखकर मंत्र सम्बन्ध दिया जाता है तब से श्रीरामसखेजू का वंशज संत व सद्गृहस्थ शिष्य, श्रीदाशरथि राम को ही अपना उपास्य देव मानकर श्रीनृत्य राघोजी की आराधना करते हैं। गौड़ सम्प्रदाय जैसा इनका भी एक अलग सम्प्रदाय है। श्रीरामसखेजी का अखाड़ा द्वारा धामक्षेत्र पाठकों के जानकारी के लिये नीचे दिया जायगा।

श्रीगुरु वशिष्ठ तीर्थजी महाराज से उपासना भावना पाने के पश्चात् कुछ दिन सेवा में रहकर आज्ञा पाय अनेक स्थानों में फिर कर जीवों पर दया करते हुए श्रीअवधमें आये और वासुदेवघाट पर घोर जंगल देखकर श्रीसरयूजी के किनारे कुटी बनाकर भजन करने

लगे। आज भी उसी स्थान पर एक बड़ा भारी स्थान बना हुआ नृत्यराघवकुञ्ज के नाम से प्रसिद्ध है । श्रीमहाराज जू को सरयू स्नान करते समय श्रीसरयूजी में गोता लगाने पर जल के अन्दर नृत्य मुद्रायुक्त एक श्याम मूर्ति मिली वही ठाकुरजी आज भी नृत्य राघोकुञ्ज में नृत्य राघवजी के नाम से विराजमान है। तब से इस सम्प्रदाय वाले श्रीनृत्य राघवजी को अपना आराध्यदेव मानते हैं।

आजके कुछ कालपूर्व इस स्थान की अच्छी उन्नति रही बड़ी धूम धाम से भगवत भागवत सेवा होती थी सारी अयोध्या के संत महात्मा यहां आकर इकट्ठा होते थे क्योंकि यहां पर कथा भी हुआ करती थी। कथावाचक पं० श्रीअवधशरणजी महाराज को अयोध्या वासी वाल्मीकिजी का एक अवतार ही मानते थे कथा भवन आज नया मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीअयोध्याजी में श्रीरामसखेजी का और भी स्थान है जिसमें रामसखेजी की बगिया, चारुशीलाकुञ्ज तथा श्रावणकुञ्ज प्रसिद्ध हैं। श्रावणकुञ्ज में श्रीगोस्वामीजो के शिष्य श्रीभगवानदासजी की हस्तलिखित रामायण है जो अयोध्याबासियों के लिये मान्य है और अन्य प्रान्त वाले भी यहां आकर इस रामायण से शंका समाधान करते हैं ।

श्रीरामसखेजी महाराज विन्दु सम्प्रदायाचार्य अनन्त श्रीविभूषित बाबा रामप्रसादजी महाराज के समकालीन थे। उस समय अवधमें सिद्ध महात्माओं की संख्या अधिक रही, सिद्ध समुदायमें श्रीमहाराज जू की चर्चा चलने लगी, समय पाकर सिद्ध समुदाय एकत्रित

हुये और श्रीमहाराज जू के प्रेम परीक्षा लेने के निमित्त सामने श्री-रघुनाथजी की मूर्त्ति दिखाकर बोले कि श्रीरामभद्र जू आपके साथ खेलें, तो हमें बिश्वास होगा कि आप सच्चे सखा हैं। श्रीमहाराज जू करुणानिधान से करुणा करके धनुष बान मूर्त्ति के कर कमलों में गहा दिये। भगवान को भक्त की बात रखनी थी, दौड़ दौड़कर शिकार खेलने लगे सबने नतमस्तक हो मानलिया। वह मूर्त्ति आज भी धनुषधारीजी के नाम से बड़ी जगह अयोध्यामें बिराजमान है। श्रीमहाराज जू के समय सख्य रस वालों का बड़ा जोर था लाखों शिष्य साधक थे।

जब श्री अवध में भारी भीड़ होने लगी तब अवध से चित्रकूट प्रमोदबनमें आकर बिराजे। वहां से पश्चिम कामतानाथजी का पर्वत है नित्य प्रति का हवन होरहा था। उसी समय एक महात्मा आकाश मार्ग से गुटका सिद्धि द्वारा रामेश्वरम् पधार रहे थे। धुआं लगते ही पृथ्वी पर उत्तर आये और आपका सत्य व्रत देख प्रसन्न होकर गुटका सिद्धी देने लगे। श्रीमहाराज जू बोले कि हमें सिद्धी की कामना नहीं है हम श्रीराम नामके विरही हैं तब वे सिद्ध महात्मा दंडवत कर पुनः आकाश मार्ग से पधार गये।

एक समय श्रीस्वामी जू प्रमोदबन हनुमान कूप पर बैठ कर भजन पूजन कर रहे थे। अकस्मात आँधी आई श्रीठाकुर बटुआ उड़कर कुएँ में चला गया। आप विरहमें भूखे प्यासे तीन दिन वहीं पड़े रहे, अन्त में यह पद गाया।

॥ पद ॥

मिल जाना श्रीरामपियारे ।
बनप्रमोद में खड़े पुकारौं, सुनहु रूप उजियारे ॥
सुन्दर बदन कमल दल लोचन, मों अंखियन के तारे ।
रामसखे ज्यों जल बिन मछली तलफत प्राण हमारे ॥
मिल जाना श्रीरामप्यारे ॥

उसी समय एक दोहा भी बोले —

दोहा—अरे शिकारी निर्दयी, करिया नृपति किशोर ।
क्यों तरसावत दरस को, रामसखे चित चोर ॥

यह दोहा समाप्त होते ही कुवां का पानी ऊपर तक उमड़ आया । श्रीशालीग्रामजी जलक्रीड़ा करते दृष्टिगोचर हुये तब उठाके कंठ से लगाये और श्रीसीतारामजी के प्रत्यक्ष दर्शन पाकर यह दोहा कहा—

अवधपुरी ते आइके, चित्रकूट को खोर ।
रामसखे मन हरि लियो, सुन्दर युगल किशोर ॥

श्रीसीतारामजी स्वरूप के शालीग्राम भगवान् नृत्यराघवकुञ्ज में बहुत दिन तक विराजमान रहे । स्थान में ऋद्धि सिद्धि की कमी नहीं रहती थी । श्रीशालिग्राम भगवान के प्रभाव को पूजा में रहने वाला एक

पुजारी संत जानता रहा, प्रेमबश श्रीशालीग्रामजी उनके साथ पधार गये। बहुत खोज किया गया मूर्ति नहीं मिली। अब श्रीमहाराजजू को प्राप्त भया तथा पूजित श्रीनृत्य राघवजी का श्रीविग्रह नृत्यराघवकुञ्ज अयोध्या में विराजमान हैं।

उस समय चित्रकूट का इलाका रियासत पन्ना में लगताथा। वहां के राजा श्रीमहेन्द्र हिन्दूपति हाथी पर चढ़े पेचवान पीते श्रीमहाराजजू के दर्शनार्थ आरहे थे। प्रमोदबन के समीप आते ही धुंवा निकलना बन्द हो गया कुछ दूर आगे बढ़े, हाथी का भी चलना बन्द होगया। कारण समझ कर कि महात्माओं के सामने हुक्का पीते जाना, हाथी पर चढ़े आना असभ्यता है। इससे यह दशा होरही है। कारण जान राजा तुरन्त हाथी से उतरकर पांब पियादे शरण में आकर अपराध क्षमा कराया पुनः राजा ने कईगांवके माफी की सनद लिखकर पान के एक बड़े बीड़े में छिपाकर भेंट किया। श्रीमहाराजजू जान गये, छुये तक भी नहीं, बोले कि यह भजन का बाधक है और राजा को शिष्य बनाकर बहुत समझाबुझाकर वापिस लौटा दिया।

जब श्रीचित्रकूट में भी काफी भीड़ होने लगी तब वहां से उचेहरा आकर कुछ दिन रहे किन्तु चित्त नहीं लगा, सम्बत १८३१ में मैहर आये और यहां पूर्व मुख एक विशाल गणेश जी की मूर्ति के सामने घास की छोटी सी कुटी बनाकर मानसिक ध्यान पूजा करने लगे तब से इस परिवार घाले की बड़ी जगह मैहर मानी जाती है। श्रीमहाराज जू मानसिक तपोबल से भोजन की सामग्री जिस प्रकार जो जरूरत होती एकत्र कर देते थे कितने ही साधू अभ्यागत आते सब तृप्त होते थे। एक बार एक चित्रगुप्त बंशी कायस्थ जिनके दोनों हाथ कटे हुये थे आकर श्रीमहाराजजू के शरण

हुआ श्रीमहाराज जू हाथ कटने का कारण अपने आप जानकर लोकोप-कारी समझ शरण में ले लिये और उनका नाम सुशीलानिधिजी रखे। एक दिन स्वामीजी ध्यानावस्था में पद की रचना कर रहे थे अकस्मात ही मुख से निकल पड़ा कि तुम इस पद को लिखते जाओ श्रीसुशीलनिधि जी कुछ उत्तर न देकर हाथ पर हाथ रखे हुये सेवा में खड़े रहे। महाराज जू की आंखे खुलीं, खेद प्रकट करते हुये बोले कि मैं जानता था कि उसका हाथ कटा हुआ है फिरभी हमारे मुंहसे ऐसा क्यों निकला भगवान् तुम्हारा भला करें श्रीनृत्यराघोजी की इच्छा से तुम लिखने के योग्य बन जाओगे। महापुरुषों की शुभकामना मंगलमय होती हैं उनके तुरन्त ही कटे हुये दोनों हाथ पूर्ववत होगये।

एक समय लखनऊ के नबाब को एक गवैया ने श्रीरामसखेकृत यह पद सुनाया 'प्यारे तेरे छबि पर वारियां' यह सुनकर नबाब बेताब हो गया और पूछा कि रामसखेजी कहां रहते हैं पता पाकर नवाब अपने नाजिर को श्रीमहाराजजू के पास भेजा और कहा कि अगर वे यहां आकर रहें तो एक लाख रुपया साल भेंट की जायगी। नाजिर द्वारा नवाब की बात सुनकर बोले कि हम राघवेन्द्र सरकार के गायक हैं बहुत हठ करने पर नाजिर को कुटी के भीतर दिखा दिया। नाजिर उस कुटी में अपार वैभव देखकर दंग रह गया और श्री महाराजजू से माफी मांगकर चला गया। नाजिर के द्वारा श्रीमहाराजजू की प्रशंसा सुनकर स्वयं दर्शनों को आया। और श्रीमहाराजजू के बचनामृत पान कर नबाब अपने को कृतकृत्य समझने लगा। ऐसे अनेक विचित्र चरित्र श्रीमहाराज जू के हैं बिस्तार के भय से संक्षेप में लिखा गया है।

श्रीरामसखेजी की बंशावली

१ आदि गुरू श्रीरामचन्द्रजी २ श्री ब्रह्माजी ३ श्रीवशिष्ठजी ४ श्री-पराशरजी ५ श्री व्यासजी ६ श्री माध्वजी ७ श्री पद्मनाभजी ८ श्री नरहरि मुनिजी ९ माधौजी १० श्री अच्योभतार्थजी ११ श्री टीकाकारजी १२ श्री-विद्याधिराजजी १३ श्री कवीन्द्रतीर्थजी १४ श्री वागीशतीर्थ जी १५ श्री-रामचन्द्रजी १६ श्री विद्यानिधिजी १७ श्रीरघुनाथाचार्य १८ श्री रघुवर्य-मुनिजी १९ श्री रघत्तमजी २० श्री वेदव्यास मुनिजी २१ श्री विद्याधीश जी २२ श्री वेदनिधिजी २३ श्री सत्यव्रतजी २४ श्री सत्यनिधिजी २५ श्रीसत्य-नाथजी २६ श्री अभिनवमुनि जी २७ श्रीसत्यपूर्णजी २८ श्री वशिष्ठतीर्थ जी स्थान हड़पी (दक्षिण) २९ श्री रामसखेजी महाराज स्थान मैहर ३० श्री सुशीलाशरणजी दूसरी गादी मैहर ३१ श्री जानकीशरणजी ३२ श्री रामप्रसादशरणजी ३३ श्री रामशरण शरणजी ३४ श्रीकामताशरणजी ३५ श्री रघुबीरशरणजी ३६ श्री रघुत्तमशरणजी ३७ श्री सीतारामशरणजी ३८ वर्तमान वयोबृद्ध महंत श्रीसरयूशरणजी तथा उपमहन्त श्री सिया-शरणजी अयोध्या श्रीनृत्यराघवकुञ्ज।

श्रीरामसखे कृत ग्रन्थ

१ द्वैतभूषण २ पदावली ३ दोहावली ४ कबितावली ५ रास-पद्धति ६ नृत्यराघव मिलन इत्यादि हैं।

श्रीरामसखे कृत धाम क्षेत्र

ब्रह्म सम्प्रदाय गोलोक देश अयोध्या धाम, सरयू क्षेत्र, रत्नागिरि परिक्रमा, बनप्रमोद सुखबिलास सोमवट बैठक, नृत्यराघव ध्यान, क्रीट मुकुट दर्शन, नूपुर सेवा, रसिक गादी ब्रह्मा आचार्य हनूमान उसीला, सखामेष चारुशीला, श्रीमध्वाचार्य हनुमत अवतार, मत अभेद, खण्डन उदार, द्वैतमत, धनुर्बाण मुद्रा, रामतारक मंत्र, गुरु श्रीवशिष्ठ, रघुनाथ गोत्र, श्रीसीताराम इष्ट। इति धाम क्षेत्र।

श्री रामसखेजी महाराज से प्रीति श्री (पीति विन्दु) चला
श्रीरामसखे परिवार की यही पहचान है। उनके भाल में पीत विन्दु हि
रहता है यह तिलक अन्य सम्प्रदाय में नहीं है। श्रीरामसखेजी का
वार विशेषरूप में बिन्ध्य प्रदेश, अयोध्या, चित्रकूट जनकपुरमें मिलत
अन्य देशों में भी जहां तहां पाये जाते हैं।

**कल्प वल्लीशाखायाँ तिलक परत्वं नाशा मूल मा
केश पर्य्यन्तं ऊर्ध्व पुंड्रं विधाय, तन्मध्ये हरिद्रा
सम्भवं विन्दुं यो धारयति स परं प्रियो भवति स
हत्यां तरति स ब्रह्म हत्यां तरति स मुक्ति भागी भवति**

(यजुर्वेद

4422
अयोध्या

भाले च रम्य तिलकं विभिरेख दीप्तं,
रामाभिन विन्दु सहितं स च पीत मध्ये।
कण्ठे तथा तुलसिदाम लसत् भुजे वै,
तप्तेण बाण धनुषांकित राम भक्तः ॥

(अगस्त्य संहिता

ललाटेधारयेदूर्ध्व पुंड्रं परमशोभनम् ।
हरिद्रा विन्दु संयुक्तमस्वमेध फलं लभेत् । १॥
युग्ममुद्रासदाधार्य्याधलोर्ध्वं युगलं शरम् ।
फलोर्ध्व दर्शनाद्विप्रं ब्रह्म हत्या व्यपोहति ॥ २

(श्रीमन्महाराम.य

नोट—षट श्री महान्त श्रीकामताशरणजी महाराज तक श्री
नृत्यराघवकुंज तथा बड़ी जगह मैहर के महांत एक ही होते आ
तत्पश्चात मैहर महाराजा के प्रेमाग्रह से यहां वहां के महांत अलग
होने लग गये। आज कल बड़ी जगह मैहर के वर्तमान महांत (
निवासी षट श्रीमहांत श्री रामरंगीलेशरणजी महाराज के उत्तराधि
षट श्री प्रमोदबन बिहारीशरण जी महाराज (शास्त्री) हैं।